ʿॐ

ʿसिरि-भगवंत-पुष्पदंत-भूदबलि-पणीदो

ʿछक्खंडागमो

ʿसिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीका-समण्णिदो

< तस्स चउत्थे खंडे वेयणाए >

ʿकदिअणियोगद्दारं

ʿसिध्दा दध्दट्ठमला विसुध्दबुध्दीए लध्दसव्वत्था ।

ʿतिहुवणसिरसेहरया पसियंतु भडारया सव्वे ।।१।।

ʿतिहुवणभवणप्पसरियपच्चक्खवबोहकिरणरिवेढो ।

ʿउड्ओ वि अणत्थवणो अरहंत-दिवायरो जयऊ ।।२।।

< आठ कर्मरूपी मलको जला देनेवाले, विशुध्द बुध्दिसे समस्त पदार्थोंको जाननेवाले, तथा तीन लोकके शिररूपी शिखरपर स्थित ऐसे सब सिध्द भट्टारक प्रसन्न होवें ।।१।। >

< जिसका प्रत्यक्ष ज्ञानरूपी किरणोंका मण्डल त्रिभुवनरूपी भवनमें फैला हुआ है, तथा जो उदित होता हुआ भी अस्त होनेसे रहित है, ऐसे अरहन्तरूपी सूर्य जयवन्त होवें ।।२।। >

< छ. क. १ >

ʿतिरयण-खग्गणिहाएणुत्तारियमोहसेण्णसिरणिवहो ।

ʿआइरियराउ पसिवउ परिवालियभवियजियलोओ ।।३।।

ʿअण्णाण-अंधयारे अणोरपारे भमंतभवियाणं ।

ʿउज्जोओ जेहि कओ पसियंतु सया उवज्झाया ।।४।।

ʿदुह-तिव्वतिसा-विणडिय-तिहुवणभवियाण सुट्ठुराएण ।

ʿपरिठविया धम्म-पवा सुअ-जलवाण-प्पयाणेण ।।५।।

ʿसंधारियसीलहरा उत्तारियचिरपमाददुस्सीलभरा ।

ʿसाहू जयंतु सव्वे सिव-सुह-पह-संठिया हु णिग्गलियभया ।। ६ ।।

ʿणमो जिणाणं ।। १ ।।

ʿकिमट्ठमिदं वुच्चदे ? मंगलट्ठं । किं मंगलं ? पुव्वसंचियकम्मविणासो । जदि एवं

< रत्नत्रयरूप खड्‌गके आघातसे मोहकी सेनाके शिरसमूहको उतारकर भव्य जीवलोकका पालन करनेवाला आचार्यरूपी राजा प्रसन्न होवें ।। ३ ।। >

< वे उपाध्याय परमेष्ठी सदा प्रसन्न होवें जिन्होंने आर-पार रहित अज्ञानरूप अन्धकारमें भटकनेवाले भव्य-जीवोंको प्रकाश दिया है, तथा जिन्होंने दुखरूपी तीव्र तृषासे व्याकुल हुए तीन लोकके भव्य जीवोंको श्रुतरूपी जलपान प्रदान करनेके हेतुसे अतिशय राग अर्थात् अनुकम्पासे धर्मरूपी प्याऊको स्थापित किया है ।। ४-५ ।। >

< जिन्होंने चिरकालीन प्रमादरूपी कुशीलके भारको उतारकर शीलके भारको धारण किया है, जो शिवसुखके मार्गमें स्थित हैं, एवं भयसे रहित हैं ऐसे सर्व साधू जयवन्त होवें ।। ६ ।। >

< जिनोंको नमस्कार हो ।। १ ।। >

ʿशंका- < यह सूत्र किस लिये कहा जाता है ? >

ʿसमाधान- < यह मंगलके लिये कहा जाता है । >

ʿशंका- < मंगल क्या है ? >

ʿसमाधान- < पूर्वसंचित कर्मोंके विनाश का नाम मंगल है । >

ʿशंका- < यदि ऐसा है तो जिन सूत्रोंका अर्थ जो जिन भगवानके मुखसे निकला हुआ >

कदिअणियोगद्दारे मंगलायरणं

ʿतो जिणवयणविणिग्गयत्थादो अविसंवादेण केवलणाणसमाणादो उसहसेणादिगणहर-देवेहि विरइयसद्दरयणादो सव्वसुत्तादो तप्पढण-गुणणाकिरियावावदाणं सव्वजीवाणं पडिसमयसंखेज्जगुणसेढीए पुव्वसंचिदकम्मणिज्जरा होदि त्ति णिप्फलमिदं सुत्तमिदि । अह सफलमिदं, णिप्फलं सुत्तज्झयणं; तत्तो समुवजायमाणकम्मक्खयस्स एत्थेवोवलंभादो । त्ति ? ण एस दोसो, सुत्तज्झयणेण सामण्णकम्मणिज्जरा कीरदे; एदेण पुण सुत्तज्झ ायणविग्धफलकम्मविणासो कीरदि त्ति भिण्णविसयत्तादो । सुत्तज्झयणविग्ध-फलकम्मविणासो सामण्णकम्मविरोहिसुत्तब्भासादो चेव होदि त्ति मंगलसुत्तारंभो अणत्थओ किण्ण जायदे ? ण,

सुत्तत्थावगमब्भासविग्धफलकम्मे अविणट्ठे संते तदवगमब्भासाणमसंभवादो । ण च कारणपुव्वकालभावि कज्जमत्थि, अणुवलंभादो । जदि जिणिंदणमोक्कारो सुत्तज्झायणविग्घफलकम्ममेत्तविणासओ तो ण सो जीविदावसाणे–

< अर्थ है, जो विसंवाद रहितहोनेके कारण केवलज्ञानके समान है, तथा वृषभसेनादि गणधर देवों द्वारा जिनकी शब्दरचना की गई है, ऐसे सब सूत्रोंसे उनके पढने और मनन करने रूप क्रियामें प्रवृत्त हुए सब जीवोंके प्रति समय असंख्यात गुणित श्रेणीसे पूर्वसंचित कर्मोंकी निर्जरा होती है, इस लिये यह जिननमस्कारात्मक सूत्र व्यर्थ पडता है । अथवा, यदि यह सूत्र सफल है तो सूत्रोंका अध्ययन करके व्यर्थ हो जायगा, क्योंकि, सूत्र के अध्ययनसे होनेवाला कर्मक्षय इस जिननमस्कारात्मक सूत्रमें ही हो जाता है ? >

ʿसमाधान–< यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, सूत्राध्ययनसे तो सामान्यसे कर्मोंकी निर्जरा की जाती है; किन्तु इस मंगलसे सूत्राध्ययनमें विघ्न करनेवाले कर्मोंका विनाश किया जाता है; इस प्रकार दोनोंका विषय भिन्न है । >

ʿशंका–< चूंकि सूत्राध्ययनमें विघ्न उत्पन्न करनेवाले कर्मोंका विनाश सामान्य कर्मोंके विरोधी सूत्राभ्याससे ही हो जाता है, अतएव मंगलसूत्रका आरम्भ करना व्यर्थ क्यों न होगा ? >

ʿसमाधान–< ऐसा नहीं है, क्योंकि, सूत्रार्थके ज्ञान और अभ्यासमें विघ्न उत्पन्न करनेवाले कर्मोंका जब तक विनाश न होगा तब तक उसका ज्ञान और अभ्यास दोनों असम्भव हैं । और कारणसे पूर्व कालमें कार्य होता नहीं है, क्योंकि, वैसा पाया नहीं जाता । >

ʿशंका–< यदि जिनेंद्रनमस्कार केवल सूत्राध्ययनमें विघ्न करनेवाले कर्मों मात्रका विनाशक है तो उसे मरण समयमें नहीं करना चाहिये, क्योंकि, उसका उस समयमें >

ʿकायव्वो, तस्स तत्थ फलाभावादो त्ति ? ण एस दोसो, एत्तियमेत्तं चेव विणासेदि त्ति णियमाभावादो । कधं पुण एसो जिणिंदणमोक्कारो एक्को चेव संतो अणेयकज्जकारओ ? ण, अणेयविहणाणचरणसहेज्जस्स अणेयकज्जुप्पायणे विरोहाभावादो । उत्तं च–

< एसो पंचणमोक्कारो सव्वपावप्पणासओ, >

< मंगलेसु अ सव्वेसु पढमं होदि मंगलं (१.मूला. ७, १३) ।। १ ।। इदि >

ʿण च एसो एक्कल्लओ चेव सव्वकम्मक्खयकरणसमत्थो, णाण-चरणब्भासाण-विहलत्तप्पसंगादो । तदो सव्वकज्जारंभेसु जिणिंदणमोक्कारो कायव्वो, अण्णहा पारध्द-कज्जणिपत्तीए अणुववत्तीदो । उत्तं च-

< आदि मंगलकरणं सिस्सा लहु पारया हवंतु त्ति । >

< मज्झे अव्वोच्छित्ती विज्जा विज्जाफलं चरिमे (२. ष. खं. पु. १ पृ. ४०, २०, पढमे मंगलवयखे सिस्सा सत्थस्स पारगा होंति । मज्झिम्मे णीविग्घं विज्जा विज्जाफलं चरिमे ।। ति.प.१,२९.)।।२।। >

< कोई फल नहीं है ? >

ʿसमाधान-< यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वह केवल सूत्राध्यायनमें विघ्न करनेवाले कर्मोंका ही विनाश करता है, ऐसा कोई नियम नहीं है । >

ʿशंका-< तो फिर यह जिनेन्द्रनमस्कार एक ही होकर अनेक कार्योंका करनेवाला कैसे होता है ? >

ʿसमाधान-< नहीं, क्योंकि, अनेक प्रकारके ज्ञान व चारित्रकी सहायतायुक्त होते हुए उसके अनेक कार्योंके उत्पादनमें कोई विरोध नहीं है । कहा भी है- >

< यह पंचनमस्कार मंत्र सर्व पापोंका नाश करनेवाला और संब मंगलोंमें प्रथम मंगल है ।। १ ।। >

< और यह अकेला ही सब कर्मोंका क्षय करनेमें समर्थ नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेपर ज्ञान और चारित्रके अभ्यासकी विफलताका प्रसंग आवेगा । इस कारण सब कार्योंके आरम्भमें जिनेन्द्रनमस्कार करना चाहिये, क्योंकि, ऐसा किये विना प्रारम्भ किये हुए कार्यकी सिध्दि घटित नहीं होती । कहा भी है- >

< शास्त्रके आदिमें मंगल इसलिये किया जाता है कि शिष्य शीघ्र ही शास्त्रके पारगामी हों । मध्यमें मंगल करनेसे शास्त्रके स्वाध्याय आदि की व्युच्छित्ति नहीं होती और अन्तमें उसके करनेसे विद्या व विद्याके फलकी प्राप्ति होती है ।। २ ।। >

कदिअणियोगद्दारे मंगलायरणं

ʿमंगल काऊण पारध्दकज्जाणं कहिं पि विग्घुवलंभादो तमकाऊण पारध्दकज्जाणं पि कत्थ पि विग्घाभावदंसणादो जिणिंदणमोक्कारो ण विग्घविणासओ त्ति ? ण एस दोसो,

कयाकयभेससाणं वाहीणमविणास-विणासदंसणेणावगयवियहिचारस्स वि मारिचादिगणस्स भेसयत्तुवलंभादो । ओसहाणमोसहत्तं ण विणस्सदि, असज्झवाहिवदिरित्तसज्झवाहिविसए चेव तेसिं वावारब्भुवगमादो त्ति चे ? जदि एवं तो जिणिंदणमोक्कारो वि विग्घविणासओ, असज्झविग्घफलकम्ममुज्झिदूण सज्झविग्घफलकम्मविणासे वावारदंसणादो । ण च ओसहेण समाणो जिणिंदणमोक्कारो, णाण-झाणसहायस्स सत्तस्स णिव्विग्घग्गिस्स अदज्झिंधणाणीव असज्झविग्घफलकम्माणमभावादो । णाणज्झाणप्पओ णमोक्कारो संपुण्णो, जहण्णो मंदसद्दहणाणुविध्दो बोध्दव्वो; सेसा असंखेज्जलोगभेयभिण्णा मज्झिमा । ण च ते सव्वे समाणफला, अइप्पसंगादो । तम्हा ण पुव्वुत्तदोसाण-

ʿशंका-< मंगल करके प्रारम्भ किये गये कार्योंके कहींपर विघ्न पाये जानेसे और उसे न करकें प्रारम्भ किये गये कार्योंके भी कहींपर भी विघ्नोंका अभाव देखे जानेसे जिनेन्द्रनमस्कार विघ्नविनाशक नहीं है ? >

ʿसमाधान-< यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जिन व्याधियोंकी औषध की गई है उनका अविनाश, और जिनकी औषध नहीं की गई है उनका विनाश देखे जानेसे जिसने व्याभिचार जान लिया है ऐसे जीवके भी मारिच (काली मिरच) आदि औषधि द्रव्योंमें औषधित्व गुण पाया जाता है । >

< यदि कहा जाय कि औषधियोंका औषधित्व (उनके सर्वत्र अचूक न होनेपर भी) इस कारण नष्ट नहीं होता, क्योंकि, असाध्य व्याधियोंको छोड करके केवल साध्य व्याधियोंके विषयमें ही उनका व्यापार माना जाता है, तो जिनेन्द्र-नमस्कार भी (उसी प्रकार) विघ्न-विनाशक माना जा सकता है, क्योंकि, उसका भी व्यापार असाध्य विघ्नोंके कारणभूत कर्मोंको छोडकर साध्य विघ्नोंसे उत्पन्न कर्मोंके विनाशमें देखा जाता है । >

< दूसरी बात यह है कि, औषधके समान जिनेन्द्र-नमस्कार नहीं है, क्योंकि, जिस प्रकार निर्विघ्न अग्निके होते हुए न जल सकने योग्य इन्धनोंके समान ज्ञान व ध्यानकी सहायतायुक्त उक्त नमस्कारके होनेपर असाध्य विघ्नोत्पादक कर्मोंका भी अभाव होता है । ज्ञान-ध्यानात्मक नमस्कारको सम्पूर्ण अर्थात् उत्कृष्ट, एवं मन्द श्रध्दानयुक्त नमस्कारको जघन्य जानना चाहिये । शेष असंख्यात लोकप्रमाण भेदोंसे भिन्न नमस्कार मध्यम हैं । और वे सब समान फलवाले नहीं होते, क्योंकि, ऐसा माननेपर अतिप्रसंग दोष आता है । इस कारण यहां पूर्वोक्त दोषोंकी >

मेत्थ संभवो त्ति सिध्दं ।

अहवा मोक्खट्टं सुत्तब्भासो कीरदे । मोक्खो वि कम्मणिज्जरादो, सा वि णाणाविणाभाविझाणचिंताहिंतो, ताओ वि सम्मत्तादो । ण च सम्मत्तेण विरहियाणं णाणझाणाणमसंखेज्जगुणसेडीकम्मणिज्जराए अणिमित्ताणं णाण-झाणववएसो पारमत्थिओ अत्थि, अवगयट्ठसद्दहणणाणे अमोक्खट्ठुज्झमे च तव्ववएसब्भुवगमे संते अइप्पसंगादो । तम्हा सम्माइट्ठिणा सम्माइट्ठीणं चेव वक्खाणेयव्वं सुत्तमिदि जाणावणट्टं जिणणमोक्कारो कओ ।

अवगयणिवारणमुहेण पयदत्थपरूवट्टं णिक्खेवो कीरदे । तं जहा-णाम-ट्ठवणा-दव्व-भवभेएण चउव्विहा जिणा । जिणसद्दो णामजिणो । ठवणजिणो सब्भावासब्भावट्ठभेएण दुविहो । जिणायारसंठियं दव्वं सब्भावट्ठवणजिणो । विपरीयमसब्भावट्ठवणजिणो दव्वजिणो आगम-णोआगमभेएण दुविहो । जिणपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो अविणट्ठसंसकारो आगमदंव्वजिणो । णोआगमदव्वजिणो जाणयसरीर-भविय-तव्वदिरित्तभेएण तिविहो । तत्थ जाणयसरीरणोआगमदव्वजिणो भविय-वट्टमाणसमुज्झाद-

< सम्भावना नहीं है, यह सिध्द हुआ । >

< अथवा मोक्षके निमित्त सूत्रोंका अभ्यास किया जाता है । मोक्ष भी कर्मोंकी निर्जरासे होता है । वह कर्मनिर्जरा भी ज्ञानके अविनाभावी ध्यान और चिन्तनसे होती है । ज्ञानके अविनाभावी ध्यान और चिन्तन भी सम्यक्त्वसे होते हैं । सम्यक्त्वसे रहित ज्ञान-ध्यानके असंख्यात गुणी श्रेणीरूप कर्मनिर्जराके कारण न होनेसे ज्ञान-ध्यान यह संज्ञा वास्तविक नहीं है, क्योंकि, अर्थश्रध्दानसे रहित ज्ञान और मोक्षार्थ न किये जानेवाले उद्यममें वह संज्ञा स्वीकार करनेपर अतिप्रसंग होता है । इसीलिये सम्यग्दृष्टियोंको ही सूत्रका व्याख्यान करना चाहिये, इस बातके ज्ञापनार्थ जिननमस्कार किया गया है । >

< अप्रकृतका निवारण करते हुए प्रकृत अर्थके प्ररूपणार्थ निक्षेप किया जाता है । वह इस प्रकार है - नाम, स्थापना, द्रव्य और भावके भेदसे जिन चार प्रकारमें हैं । जिन शब्द नाम जिन है । स्थापना जिन सद्भावस्थापना और असद्भावस्थापनाके भेदसे प्रकार हैं । जिन भगवानके आकार रूपसे स्थित द्रव्य सद्भावस्थापना जिन है । विपरीत असद्भावस्थापना जिन है, द्रव्यजिन आगम और नोआगमके भेदके दो प्रकारके हैं । जिनप्राभृतका जानकार, अनुपयुक्त और संस्कारके

विनाशसे रहित जीव आगमद्रव्य जिन है । नोआगमद्रव्य जिन ज्ञायकशरीर, भव्य और तद्व्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकारके हैं । उनमें ज्ञायकशरीरनोआगमद्रव्य जिन भव्य, >

कदिअणियोगद्दारे मंगलायरणं

ˁभेएण तिविहो । कधमेदेसिं तिण्णं सरीराणं णिच्चेयणाणं जिणव्वएसो ? ण, धणुहसहचारपज्जाएण तीदाणागय-वट्टमाणमणुआणं धणुहववएसो व्व जिणाहारपज्जाएण तीदाणागय-वट्टमाणसरीराणं दव्वजिणत्तं पडि विसेसाभावादो । आगमसण्णा अणुवजुत्तजीवदव्वस्सेव एत्थ किण्ण कदा, उवजोगाभावं पडि विसेसाभावादो ? ण, एत्थ आगमसंसकाराभावेण तदभावादो । भविस्सकाले जिणपज्जाएण परिणमंतओ भवियदव्वजिणो । भविस्सकाले जिणपाहुडजाणयस्स भूदकाले णादूण विस्सरिदस्स य णोआगमभवियदव्वजिणत्तं किण्ण इच्छिज्जदे ? ण, आगमदव्वस्स आगमसंसकारपज्जायस्स आहरत्तणेण तीदाणागद-वट्टमाणस्स णोआगमदव्वत्तविरोहादो । तव्वदिरित्तदव्वजिणो सचित्ताचित्त-तदुभयभेएण तिविहो । करइ-हयहत्थीणं जेदारो सचित्तदव्व-जिणो । हिरण्ण-सुवण्ण-मणि-मोत्तियादीणं जदारो अचित्तदव्वजिणो । ससुवण्णकण्णादी-णं जेदारो सचित्ताचित्तदव्वजिणो । आगम-णोआगमभेएण दुविहो भावजिणो। जिण—

< वर्तमान और समुज्झितके भेदसे तीन प्रकारके हैं । >

ˁशंका— < इन अचेतन तीन शरीरोंके जिन संज्ञा कैसे सम्भव है ? >

ˁसमाधान— < नहीं, क्योंकि, जिस प्रकार धनुषसहचाररूप युक्त पर्यायसे अतीत, अनागत और वर्तमान मनुष्योंकी धनुष संज्ञा होती है, उसी प्रकार जिनके आधाररूप पर्यायसे अतीत, अनागत और वर्तमान शरीरोंके द्रव्य जिनत्वके प्रति कोई विरोध नहीं है । >

ˁशंका— < अनुपयुक्त जीवद्रव्यकी युक्त आगम संज्ञा है, ऐसेही इन शरीरोंकी आगम संज्ञा क्यों नहीं की, क्योंकि, दोनोंमें उपयोगाभावकी उपेक्षा कोई भेद नहीं है ? >

ˁसमाधान— < नहीं की, क्योंकि, इन शरीरोंमें आगमसंस्कारका अभाव होनेसे उक्त संज्ञाका अभाव है । >

< भविष्य कालमें जिनपर्यायसे परिणमन करनेवाला भावी द्रव्यजिन है । >

ˁशंका— < भविष्य कालमें जिनप्राभृतको जाननेवाले व भूत कालमें जानकर विस्मरणको प्राप्त हुए जीवके नोआगमभाविद्रव्यजिनत्व क्यों नहीं स्वीकार करते ? >

ʿसमाधान7< नहीं, क्योंकि, आगमसंस्कार पर्यायका आधार होनेसे अतीत, अनागत व वर्तमान आगमद्रव्यके नोआगमद्रव्यत्वका विरोध है । >

< तद्व्यतिरिक्तद्रव्यजिन सचित्त, अचित्त और तदुभयके भेदसे तीन प्रकारके हैं । ऊंट घोडा और हाथियोंके विजेता सचित्तद्रव्यजिन हैं । हिरण्य, सुवर्ण, मणि और मोती आदिकोंके विजेता अचित्तद्रव्यजिन हैं । सुवर्णसहित कन्यादिकोंके विजेता सचित्ताचित्तद्रव्य-जिन हैं । >

< आगम और नोआगमके भेदसे भावजिन दो प्रकार है । जिनप्राभृतका जानकार >

ʿपाहुडजाणओ उवजुत्तो आगमभावजिणो । णोआगमभावजिणो उवजुत्तो तप्परिणदो त्ति दुविहो । जिणसरूवपरिच्छेदिणाणपरिणदो उवजुत्तभावजिणो । जिणपज्जायपरिणदो तप्परिणयभावजिणो 7

ʿएदेसु जिणेसु कस्स एसो कओ णमोक्कारो ? तप्परिणयभावजिणस्स ठवणाजिणस्स य । अणंतणाण-दंसण-वीरिय-विरइ-खइयसम्मत्तादिगुणपरिणयजिणस्स णमोक्कारो कीरउ णाम, तत्थ देवत्तुवलंभादो । ण ठवणाए जिणगुणविरहियाए, तत्थ विग्घफलकम्मविणासणसत्तीए अभावादो त्ति ? तत्थेदं ताव संपहारेमो-ण ताव जिणो सगवंदणाए परिणयाणं चेव जीवाणं पावस्स पणासओ, वीयरायत्तस्साभावप्पसंगादो । ण सव्वेसिं पावमवहरइ, जिणणमोक्कारस्स विहलत्तप्पसंगादो । परिसेसत्तणेण जिणपरिणयभावो जिणगुणपरिणामो च पावपणासओ त्ति इच्छियव्वो, अण्णहा कम्मक्खयाणुववत्तीदो । सो वि जिणगुणपरिणामभावो जिणिंदादो व्व अज्झारोवियाणंतणाण-दसंण-वीरिय-विरइ-सम्मत्तादिगुणाए अज्झाहारोवबलेणेव जिणेण सह एयत्तमुवगयाए ठव7

< उपयुक्त जीव आगमभाव जिन है । नोआगमभाव जिन उपयुक्त और तत्परिणतके भेदसे दो प्रकारके हैं । जिनस्वरूपको ग्रहण करनेवाले ज्ञानसे परिणत जीव उपयुक्तभावजिन हैं । जिनपर्यायसे परिणत जीव तत्परिणतभावजिन है । >

ʿशंका7< इन जिनोंमें किस जिनको यह नमस्कार किया गया है ? >

ʿसमाधान7< तत्परिणतभावजिन और स्थापनाजिनको यह नमस्कार किया गया है । >

ʿशंका7< अनन्त ज्ञान, दर्शन, वीर्य, विरति और क्षायिक सम्यक्त्वादि गुणोंसे परिणत जिनको भले ही नमस्कार किया जाय, क्योंकि, उसमें देवत्व पाया जाता है । किन्तु जिनगुणसे रहित स्थापनाको नमस्कार करना ठीक नहीं है, क्योंकि, उसमें विघ्नोत्पादक कर्मोंके विनाश करनेकी शक्तिका अभाव है । >

ʿसमाधान्॰< उक्त शंका होनेपर यह परिहार करते हैं- जिनदेव अपनी वन्दनामें परिणत जीवोंके ही पापके विनाशक नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेपर उनमें वीतरागताके अभावका प्रसंग आता है । न वे सब जीवोंके पापको नष्ट करते हैं, क्योंकि, ऐसा होनेपर जिननमस्कारकी विफलताका प्रसंग आता है । तब परिशेषरूपसे जिनपरिणत भाव और जिनगुणपरिणामको पापका विनाशक स्वीकार करना चाहिये, क्योंकि, इसके विना कर्मोंका क्षय घटित नहीं होता, वह भी जिनगुणपरिणम भाव जिनेन्द्रके समान अनन्त ज्ञान, दर्शन, वीर्य, विरति और सम्यक्त्वादि गुणोंकेअध्यारोपसे युक्त और अध्याहारकेबलसे ही जिनकेसाथ एकताको प्राप्त हुई स्थापनासे भी उत्पन्न होता है । इसी कारण जिनेन्द्रनमस्कारकेसमान जिस मूर्तिमें जिनकी स्थापना की >

ʿणाए वि समप्पज्जइ त्ति जिणिंदणमोक्कारो व्व जिणट्ठवणणमोक्कारो वि पावपणासओ त्ति किण्ण इच्छिज्जदे, विसेसाभावादो । णाम-दव्व-णोआगमउवजुत्तभावजिणाणं णमोक्कारो किण्ण कीरदे ? ण तेसिं जिणत्त-जिणट्ठवणत्ताभावादो। कुदो ? ण ताव जिणत्तं, अणंतणाणादिजिणणिबन्धणगुणविरहियाणं जिणत्तविरोहादो । ण तेसिं ठवणभावो वि, तत्थ जिणत्तारोवाभावादो । भावे वा ण ते णामादओ, ठवणाए तेसिमंतब्भावादो । ण चोभयवज्जिएसु णमोक्कारो पावपणसओ, अइप्पसंगादो । जदि एवं तो तिकालविसेसियमुणि-जिणसरीरूज्जंत-चंपापावाणयरादिणमोक्कारो णिप्फलो होदि त्ति णासकणिज्जं, तेसिं सब्भावासब्भावट्ठवणंतब्भूदाणं णमोक्कारस्स णिप्फलत्तविरोहादो । सब्भावासब्भावट्ठवणणमोक्कारे फलवंते संते सव्वेसिं जिणट्ठवणत्तमावण्णाणं णमोक्कारो फलवंतो जायदे । उत्तं च॰

< गई है उस स्थापनारूप जिनको नमस्कार भी पापका विनाशक है, ऐसा क्यों नहीं स्वीकार करते, क्योंकि, दोनोंमें कोई विशेषता नहीं है । >

ʿशंका॰< नामजिन, द्रव्यजिन और नोआगमउपयुक्तभावजिनको नमस्कार क्यों नहीं करते ? >

ʿसमाधान्॰< नहीं करते, क्योंकि, उनमें जिनत्व और जिनस्थापनात्वका अभाव है । कारण कि उन तीनों जिनोंमें जिनत्व तो बनता ही नहीं, क्योंकि, अनन्त ज्ञानादि युक्त जिनके कारण भूत गुणोंसे रहित उनके जिनत्वका विरोध है । स्थापनापना भी उनके नहीं है, क्योंकि, उनमें जिनत्वकेआरोपका अभाव है । और यदि आरोप है तो वे नामादिक जिन नहीं हो सकते, क्योंकि,

उनका स्थापनामें अन्तर्भाव होता है । और जिनत्व व जिनस्थापनासे रहित अन्य जिनोंमें किया गया नमस्कार पापप्रणाशक नहीं हो सकता, क्योंकि, ऐसा होनेमें अतिप्रसंग दोष आता है ।>

ʻशंका-< यदि ऐसा है तो तीन कालोंसे विशेषित मुनि व जिनका शरीर, एवं ऊर्जयन्त, चम्पापुर और पावानगर आदिको किया जानेवाला नमस्कार निष्फल हो जाता है ? >

ʻसमाधान-< ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिये, क्योंकि, वे उनके सद्‌भावस्थापना या असद्‌भावस्थापनामें अन्तर्भूत हैं, इस लिये उन्हें किया गया नमस्कार निष्फल माननेमें विरोध आता है । सद्‌भावस्थापनानमस्कार और असद्‌भावस्थापनानमस्कारके फलवान् होनेपर जिन्स्थापनात्वको प्राप्त सबोंको किया गया नमस्कार फलवान् होता है । कहा भी है- >

छक्खंडागमे वेयणाखंडे

< आलंबणेहि भरिओ लोगो झाइदुमणस्स खवयस्स ।
जं जं मणसा पस्सइ तं तं आलंबणं होई (१ भ. आ. १८७६)।। ३ ।। >

ʻबुध्दीए जले थले आयासे वा संकप्पिओ जिणो चउव्विहेसु णिक्खेवेसु कत्थ णिवदेदे ? णोआगमभावणिक्खेवे, उवजुत्तसरूवादो । ण च एसो ठवणा होदि, अण्णम्हि दव्वे णिणगुणारोवाभावादो । तम्हा एदस्स वि णमोक्कारो फलंवतो त्ति सिध्दं ।

ʻएदेण पंचगुरूणं तट्ठवणाणं च णमोक्कारो कदो, सव्वेसिमेत्थ संभवादो । तं जहा- जिणा दुविहा सयल-देसजिणभेदेण । खवियघाइकम्मा सयलजिणा । के ते ? अरहंत-सिध्दा । अवरे आइरिय-उवझाय-साहू देसजिणा तिव्वकसाइंदिय-मोहविजयादो ।

< ध्यानमें मन लगानेवाले क्षपकके लिये यह लोक ध्यानके आलम्बनोंसे परिपूर्ण है । ध्यानमें ध्याता जो जो मनसे देखता है अर्थात् जिस-जिस वस्तुका मनसे विचार करता है वह वह आलम्बन हो जाता है ।। ३ ।। >

ʻशंका-< बुध्दिसे जलमें, स्थलमें अथवा आकाशमें संकल्पित जिन चार प्रकारके निक्षेपोंमेंसे किसमें अन्तर्भूत है ? >

ʻसमाधान-< नोआगमभावनिक्षेपमें, क्योंकि, वह उपयुक्तस्वरूप है । यह नोआगमभावनिक्षेप स्थापना नहीं है, क्योंकि, अन्य द्रव्यमें जिनगुणोंके आरोपका अभाव है । इस कारण इसको अर्थात् संकल्पित जिनको भी किया गया नमस्कार सफल है, यह सिध्द हुआ । >

ʻविशेषार्थ-< काष्ठ व वस्त्रादि रूप तदाकार या अतदाकार वस्तुमें जो किसी अन्य पदार्थकी कल्पना की जाती है वह स्थापना निक्षेप कहा जाता है । इस प्रकार स्थापनामें दो पदार्थोंका होना आवश्यक है । परन्तु यहां चूंकि बुध्दिसे जल-थलादिमें की जानेवाली जिनकी कल्पनामें दो पदार्थोंका अस्तित्व है नहीं, अत: वह स्थापना नहीं कहला सकती । किन्तु जिनस्वरूपको ग्रहण करनेवाले ज्ञानसे परिणत होनेके कारण उसे उपयुक्त नोआगमभाव जिन कहना ही उचित है । (देखो पीछे पृ. ८) >

< इस सूत्रके द्वारा पांच गुरूओं और उनकी स्थापनाओंको नमस्कार किया गया है, क्योंकि, यहां सभीकी सम्भावना है । वह इस प्रकारसे- सकल जिन और देश जिनके भेदसे जिन दो प्रकारके हैं । जो घातिया कर्मोंका क्षय कर चुके हैं, वे सकल जिन हैं । वे कौन हैं ? अरहन्त और सिध्द । इतर आचार्य, उपाध्याय और साधु देशजिन हैं, क्योंकि, उन्होंने तीव्र कषाय, >

कदिअणियोगद्दारे मंगलावरर्णहोदु

णाम सयलजिणणमोक्कारो पावप्पणासओ, तत्थ सव्वगुणाणमुवलंभादो । ण देसजिणाणमेदेसु तदणुवलंभादो त्ति ?। ण, सयलजिणेसु व देसजिणेसु वि तिण्हं रयणाणमुवलंभादो । ण च तिरयणवदिरित्ता देवत्तणिबंधणा सयलजिणे के वि गुणा संति; अणुवलंभादो । तदो सयलजिणणमोक्कारो व्व देसजिणणमोक्कारो वि सयलकम्मक्खयकारओ त्ति दट्ठव्वो । सयलासयलजिणट्ठियतिरयणाणं ण समाणत्तं, संपुण्णासंपुण्णाणं समाणत्तविरोहादो । संपुण्णतिरयणकज्जमसंपुण्णतिरयणाणि ण करेंति, असमाणत्तादो त्ति ण, णाण-दंसण-चरणाणमुप्पण्णसमाणत्तुवलंभादो । ण च असमाणाणं कज्जं असमाणमेव त्ति णियमो अत्थि, संपुण्णग्गिणा कीरमाणदाहकज्जस्स तदवयवे वि उवलंभादो, अमियघडसएण कीरमाणणिव्विसीकरणादिकज्जस्स अमियस्स चुलुवे वि उवलंभादो वा । ण च तिरयणाणं देसजिणट्ठियाणं सयलजिणट्ठिएहि भेओ, बज्झंतरंगासेसत्थपडिबध्दत्तणेण समाणत्तुवलंभादो । ण च आविब्भावाणाविब्भावकओ विसेस्रो

< इन्द्रिय एवं मोहको जीत लिया है । >

ʿशंका-< सकलजिनको किया गया नमस्कार पापका नाशक भले ही हो, क्योंकि, उनमें सब गुण पाये जाते हैं । किन्तु देशजिनोंको किया गया नमस्कार पापप्रणाशक नहीं हो सकता, क्योंकि, इनमें वे सब गुण नहीं पाये जाते ? >

ʿसमाधान-< नहीं, क्योंकि, सकलजिनोंके समान देशजिनोंमें भी तीन रत्न पाये जाते हैं । और तीन रत्नोंके सिवाय देवत्वके कारणभूत अन्य कोई भी गुण सकलजिनोंमें नहीं पाये जाते, क्योंकि, अन्य गुणेंकी उनमें उपलब्धि नहीं होती । इसलिये सकलजिनोंके नमस्कार करनेके समान देशजिनोंको नमस्कार करना भी सब कर्मोंका क्षयकारक है, ऐसा निश्चय करना चाहिये । >

ʿशंका-< सकलजिनों और देशजिनोंमें स्थित तीन रत्नोंके समानता नहीं हो सकती, क्योंकि, सम्पूर्ण और असम्पूर्णकी समानताका विरोध है । सम्पूर्ण रत्नत्रयका कार्य असम्पूर्ण रत्नत्रय नहीं करते, क्योंकि, वे असमान हैं ? >

ʿसमाधान-< नहीं, क्योंकि, ज्ञान, दर्शन और चारित्रके सम्बन्धमें उत्पन्न हुई समानता उनमें पायी जाती है । और असमानोंका कार्य असमान ही हो ऐसा नियम नहीं है, क्योंकि, सम्पूर्ण अग्निके द्वारा किया जानेवाला दाहकार्य उसके अवयवमें भी पाया जाता है, अथवा अमृतके सैकडों घडोसे किया जानेवाला निर्विषीकरणादि कार्य चुल्लू भर अमृतमें भी पाया जाता है । इसके अतिरिक्त देशजिनोंमें स्थित तीन रत्नोंका सकलजिनोंमें स्थित रत्नत्रयसे कोई भेद नहीं है, क्योंकि, बाह्य और अभ्यन्तर समस्त पदार्थोंसे संबध्द होनेकी अपेक्षा समानता >

ʿतेसिं सरूवेण समाणत्तस्स विणासओ, आविब्भूदसूरमंडलस्स अणाविब्भूदसूरमंडलस्स सूरमंडलत्तेण समाणत्तुवलंभादो ।

ʿएवं दव्वट्ठियजणाणुग्गहट्ठं णमोक्कारं गोदमभडारओ महाकम्मपयडिपाहुडस्स आदिम्हि काऊण पज्जवट्ठियणयाणुग्गहट्ठमुत्तरसुत्ताणि भणदि-

ʿणमो ओहिजिणाणं ।। २ ।।

ʿओहिसद्दो अप्पाणम्मि वट्टदे, ओहि त्ति आह, इदि एत्थ अप्पाणम्मि पउत्तिदंसणादो । सब्भावासब्भावट्ठवणासु वि वट्टदे, एसा सो ओहि, त्ति आरोवबलेण ओहिणा एगत्तं

गयदव्वाणमुवलंभादो । कत्थ वि मज्जायाए वट्टदे, जहा माणुसखेत्तोही माणुसुत्तरसेलो, लोगोही तणुवायपेरंतो त्ति । कत्थ वि णाणे वट्टदे ओहिणा जाणादि त्ति । एत्थ णाणे वट्टमाणो ओहिसद्दो घेतव्वो । मज्जायाए रूढो ओहिसद्दो कधं णाणे वट्टदे ?

< पायी जाती है। और आविर्भाव व अनाविर्भावसे किया गया भेद स्वरूपसे उनकी समानताका विनाशक नहीं है, क्योंकि, आविर्भूत सूर्यमण्डल और अनाविर्भूत सूर्यमण्डलके सूर्यमण्डलपनेकी अपेक्षा समानता पायी जाती है । >

< इस प्रकार द्रव्यार्थिक जनोंके अनुग्रहार्थ गौतम भट्टारक महाकर्मप्रकृतिप्राभृतको आदिम नमस्कार करके पर्यायार्थिकनययुक्त शिष्योंके अनुग्रहार्थ उत्तर सूत्रोंको कहते हैं- >

< अवधि जिनोंको नमस्कार हो ।। २ ।। >

< अवधि शब्द अपनेमें प्रवृत्त है, क्योंकि, अवधि इस प्रकार स्वयंवह शब्द कहा गया है, क्योंकि, यहां अपनेमें अवधि शब्दकी प्रवृत्ति देखी जाती है । सद्‌भाव और असद्‌भाव रूप स्थापनामें भी यह अवधि शब्द रहता है, क्योंकि, यह वह अवधि है, इस प्रकार आरोपके बलसे अवधिके साथ एकताको प्राप्त द्रव्य पाये जाते हैं । कहींपर मर्यादाके अर्थमें भी इस शब्दका प्रयोग होता है; जैसे, मानुषक्षेत्रकी अवधि (मर्यादा) मानुषोत्तर पर्वत है, लोककी अवधि तनुवात पर्यन्त है । कहींपर ज्ञान अर्थमें भी यह शब्द आता है; जैसे अवधि (ज्ञान) से जानता है । यहांपर अवधि शब्को ज्ञानके अर्थमें ग्रहण करना चाहिये । >

ʿशंका-< मर्यादा अर्थमें रूढ अवधि शब्द ज्ञानके अर्थमें कैसे रहता है ? >

ʿसमाधान-< नहीं, क्योंकि, जिस प्रकार असिसे सहचरित पुरूषके लिये उपचारसे >

कदिअणियोगद्दारे मंगलायरणं

ʿण, उवयारेण असिसहचरियस्स पुरिसस्स असित्तमिव ओहिसहचरियस्स णाणस्स ओहित्तविरोहाभावादो । अथवा अवाग्धानादवधिरति (१ अवाग्धानादवच्छिन्नविषयाध्दा अवधिः। स. सि. १,९. अवधिशब्दोऽधःपर्यायवचनः, यथाधः क्षेपणमवक्षेपणम्, इत्यधोगतभूयोद्रव्यविषयो ह्यवधिः। त.रा.वा.१,९,३. अधस्ताद्‌बहुतरविषयग्रहणादवधिरूच्यते । देवाः खलु अवधिज्ञानेन सप्तमनरकपर्यन्तं पश्यन्ति, उपरि स्तोकं पश्यन्ति निजविमानध्वजदण्डपर्यन्तमित्यर्थः। श्रुतसांगरी १,९.) व्युत्पत्तेर्ज्ञानस्य अवधित्वं घटते । एदेण वक्खाणेण मदि-सुदणाणमोहित्तमोसारिदं । पुव्विल्लवक्खाणेण मदि-सुद-मणपज्जवणाणमोहिसहचरिदाणमोहिवएसो किण्ण पसज्जदे ? ण,

तेसु तहाविहरूढीए णिमित्ताभावादो । ओहिणाणे ओहिववहारो किण्णिमित्तो ? ओहिणाणादो हेट्ठिमसव्वणाणाणि सावहियाणि, उवरिमकेवलणाणं णिरवहियमिदि जाणावणट्ठमोहि-

< आसि कहनेमें कोई विरोध नहीं आता उसी प्रकार अवधिसे सहचरित ज्ञानको अवधिज्ञान माननेमें कोई विरोध नहीं आता । >

< अथवा, अवाग्धानात् अवधि: अर्थात् जो अधोगत पुद्‌गलको अधिकतासे ग्रहण करे वह अवधि है, इस व्युत्पत्तिसे ज्ञानको अवधिपना घटित होता है, इस व्याख्यानसे मति और श्रुत ज्ञानके अवधित्वका निराकरण किया गया है । >

ʿशंका- < पूर्वोक्त व्याख्यानसे मति, श्रुत और मन:पर्यय ज्ञानको अवधिसे सहचरित होनेके कारण अवधि संज्ञाका प्रसंग क्यों नहीं प्राप्त होता है ? >

ʿसमाधान- < नहीं, क्योंकि, उन ज्ञानोंमें उस प्रकार रूढिके होनेमें किसी निमित्तका अभाव है । >

ʿशंका- < अवधिज्ञानमें अवधि शब्दके व्यवहारका क्या निमित्त है ? >

ʿसमाधान- < अवधिज्ञानसे नीचेके सब ज्ञान अवधिसे सहित और उपरिम केवलज्ञान अवधिसे रहित है, यह बतलानेके लिये अवधि शब्दका व्यवहार किया गया है । >

ʿविशेषार्थ- < यहां शंका उत्पन्न होती है कि मन:पर्यय ज्ञान भी तो सावधि है । परन्तु वह अवधिज्ञानसे नीचेका ज्ञान नहीं है, किन्तु उससे ऊपरका है । अत: अवधिज्ञानसे नीचेके सब ज्ञान अवधि सहित और उपरिम केवलज्ञान अवधिसे रहित है, यह बतलानेके लिये अवधि शब्दका व्यवहार किया गया है यह समाधान ठीक नहीं मालूम होता ? इस शंकाका समाधान यह है कि मन:पर्ययज्ञानका विषय चूंकि अवधिज्ञानकी अपेक्षा सूक्ष्म है अत: वह भी विषयकी अवधिज्ञानसे नीचेका ही ज्ञान है । इसलिये पूर्वोक्त समाधान संगत ही है । मति-श्रुतावधि-मन:पर्यय-केवलानि ज्ञानम् इस प्रकार तत्त्वार्थसूत्रादिमें जो मन:पर्ययज्ञानका अवधिज्ञानसे ऊपर निर्देश किया गया है उसका कारण संयमका सहचारित्व है । (देखो कसायपाहुड भा. १ पृ. १७) >

ʿववहारो कदो । एसो दव्वट्ठियणयणिद्देसो ण होदि, पज्जवट्ठियणयाहियारादो । परमसव्वाणंतोहीणं पि गहणं ण होदि, उवरि तेसिं पुधसुत्तदंसणादो । तदो देसोहीए एसो णिद्देसो त्ति दट्ठव्वो । कधमोहिणा णामेगदेसेण देसोही अवगम्मदे ? ण, सत्तहामा भामा, भिमसेणो सेणो, बलदेवो देवो

इच्चाईसु णामेगदेसादो वि णामिल्लविसयणाणुप्पत्तिदंसणादो । सा च देसोही तिविहा - जहण्णा उक्कस्सा अजहण्णाणुक्कस्सा चेदि । तत्थ जहण्ण-देसोहीए अण्णहापमाणपरूवणोवायाभावादो जहण्णविसयपरूवणामुहेण जहण्णोहीए पमाणपरूवणा कीरदे । तं जहा - विसओ चउव्विहो दव्व-खेत्त-काल-भावभेएण । तत्थ जहण्णदव्वपमाणे भण्णमाणे सगविस्ससोवचयसहिदकम्मविरहिद-ओरालियसरी-रदव्वे सविस्ससोवचए घणलोगेण भागे हिदे तत्थ एगभागो जहण्णोहिदव्वं होदि (२ णोकम्मुरालसंचं मज्झिमजोगज्जयं सविस्सचयं । लोयविभत्तं जाणदि अवरोही दव्वदो ण्यिमा ।। गी.जी. ३७७.)।

< यह द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा निर्देश नहीं है, क्योंकि, पर्यायार्थिक नयका अधिकार है । यहां परमावधि, सर्वावधि और अनन्तावधिका भी ग्रहण नहीं होता, क्योंकि, आगे इनके पृथक् सूत्र देखे जाते हैं । इसी कारण यह देशावधिका निर्देश है ऐसा समझना चाहिये । >

शंका- < नामके एकदेश अवधिसे देशावधि कैसे जाना जाता है । >

समाधान- < नहीं, क्योंकि, भामासे सत्यभामा, सेनसे भीमसेन और देवसे बलदेव, इत्यादिकोंमें नामके एकदेशसे भी नामवालोंको विषय करनेवाले ज्ञानकी उत्पत्ति देखी जाती है । >

< वह देशावधि तीन प्रकारका है- जघन्य, उत्कृष्ट और अजघन्यात्कृष्ट । उनमें चूंकि जघन्य अवधिविषयकी प्रमाणप्ररूपणाके विना जघन्य देशावधिकी प्रमाणप्ररूपणाका कोई उपाय नहीं है, अत: जघन्य विषयकी प्ररूपणा करते हुए जघन्य अवधिके प्रमाणकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है - द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावके भेदसे विषय चार व उपने विस्रसोपचय सहित औदारिकशरीर (नोकर्म) द्रव्यमें घनलोकका भाग देनेपर उसमें एक भाग प्रमाण जघन्य अवधि द्रव्य होता है । >

शंका- < विस्रसोपचय सहित औदारिकशरीर भाज्य राशि और घनलोक ही भागहार >

< १ क. पा. भा. १ पृ. १७. >

ओरालियसरीरं सोवचयं भज्जमाणं घणलोगो चेव भागहारो होदि त्ति कुदो णव्वदे ? आइरियपरंपरागदुवदेसादो । ओरालियसरीरं सविस्सासोवचयं जहण्णुक्कस्स-तव्वदिरित्तभेएण तिविहं । तत्थ किं घणलोगेण छिज्जदि ? ण जहण्णं ण उक्कस्सदव्वं, किंतु तव्वदिरित्तदव्वं

जिणदिट्ठभावं घणलोगेण छिज्जदि । कुदो ? खविदगुणिदविसेसणविसिट्ठदव्वणिद्देसाभावादो । ण च संखाए चेव एस णियमो त्ति पच्चवट्ठाणं कादुं जुत्तं, एत्थ वि संखाहियारादो । जहण्णोहिणाणं किमेदमेव दव्वं जाणदि अह अण्णं पि ? जदि एदमेव जाणदि तो अप्पणो ओहिखेत्तब्भंतरे ट्ठियाणं जहण्णदव्वक्खंधादो परमाणुत्तरदुपरमाणुत्त-रादिकमेण ट्ठियखंधाणमपरिच्छेदयं होज्ज ण च एवं, सगखेत्तब्भंतरे ट्ठियाणमणंतभेदभिण्णखंधाणमपरिच्छित्तिविरोहादो (१ तज्जघन्यपुद्गस्कंधस्योपरि एक-द्वयादिप्रदेशोत्तरपुद्गस्कंधान् न जानातीति न वाच्यम् सूक्ष्मविषयज्ञानस्य स्थूलावबोधने सुघटत्वात् । गो.जी.३८२, जी.प्र. टीका.)। अह परमाणुत्तरे वि खंधे जइ जाणइ णेदमेव जहण्णोहिदव्वमण्णेसिं पि जहण्णोहिदव्वाणं दंसणादो त्ति ? को एवं भणद्दि

< होता है, यह कहांसे जाना जाता है ? >

ʿसमाधान–< यह आचार्यपरम्परागत उपदेशसे जाना जाता है । >

ʿशंका–< औदारिकशरीर विस्त्रसोपचय सहित जघन्य, उत्कृष्ट और तद्व्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकारका है । उनमें किसे घनलोकसे भाजित किया जाता है ? >

ʿसमाधान–< न तो जघन्य द्रव्यको और न उत्कृष्ट द्रव्यको घनलोकसे भाजित किया जाता है, किन्तु जिन भगवान्से देखा गया है स्वरूप जिसका ऐसा तद्व्यतिरिक्त द्रव्य घनलोकसे भाजित किया जाता है । कारण कि क्षपित व गुणित विशेषणसे विशिष्ट द्रव्यके निर्देशका अभाव है । संख्यामें ही यह नियम है ऐसा प्रत्यवस्थान (समाधान) करना भी उचित नहीं है, क्योंकि, यहां भी संख्याका अधिकार है । >

ʿशंका–< जघन्य अवधिज्ञान क्या इसी द्रव्यको जानता है अथवा अन्यको भी जानता है ? यदि इसे ही जानता है तो अपने अवधिक्षेत्रके भीतर स्थित जघन्य द्रव्यस्कन्धसे एक परमाणु अधिक, दो परमाणु अधिक इत्यादि क्रमसे स्थित स्कन्धोंका ग्राहक न हो सकेगा । और ऐसा है नहीं, क्योंकि, अपने क्षेत्रके भीतर स्थित अनन्त भेदोंसे भिन्न स्कन्धोंके ग्रहण न होनेका विरोध है । यदि परमाणु अधिक स्कन्धोंको भी वह जानता है तो यही जघन्य अवधिद्रव्य न होगा, क्योंकि, अन्य भी जघन्य अवधिद्रव्य देखे जाते हैं ?

ʿसमाधान–< ऐसा कौन कहता है कि जघन्य अवधिद्रव्य एक प्रकारका है । किन्तु >

ʻजहण्णोहिदव्वमेयवियप्पमिदि, किंतु अणंतवियप्पं । तेसु अणंतवियप्पजहण्णोहिखंधेसु अइजहण्णो एसो खंधो वरूविदो । एदम्हादो एग-दो-तिण्णि आदिपरमाणूणखंधा देसोहीए जहण्णियाए अविसया, जहण्णोहिविसयदव्वक्खंधब्बाहिरे अवट्ठाणादो । जहण्णोहिविसयउक्कस्सक्खंधपमाणं किं? जहण्णोहिखेंत्तब्भंतरे जो सम्माइ पोग्गलक्खंधो सो तस्स उक्कस्सदव्वं । तत्तो एग-दो-तिण्णिआदि जाव अणंतपरमाणू सगुक्कस्सदव्वसंबध्दा वि संता ण जहण्णोहिणाणपरिच्छेज्जा, ओहिणाणुज्जोवबज्झखेत्ते अवट्ठाणादो । एव जहण्णोहिदव्वपरूवणा कदा ॽ

ʻसंपहि तस्स खेत्तपरूवणा कीरदे - पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभाएण उस्सेहघणंगुले भागे हिदे एगभागो देसोहिजघण्णखेत्तं । कुदो एदं णव्वदे ?

< ओगाहणा जहण्णा णियमा दु सुहुमणिगोदजीवस्स । >

< जद्देही तद्देही जहण्णिया खेत्तदो ओही (१ सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जादस्स तदियसमयम्हि । अवरोगाहणमाणं जहण्णयं ओहिखेत्तं तु ।। गो.जी.३७८. जावइया तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स । ओगाहणा जहण्णा ओहीखेत्तं जहण्णं तु ।। विशे.भा.५९१.)।। ४ ।। >

< वह अनन्त विकल्परूप है । उन अंनन्त विकल्परूप जघन्य अविधिस्कन्धोंमें यह स्कन्ध अति जघन्य कहा गया है । इस स्कन्धसे एक, दो, तीन आदि परमाणुओंसे न्यून स्कन्ध जघन्य देशावधिके विषय नहीं हैं, क्योंकि, वे जघन्य अवधिके विषयभूत द्रव्यस्कन्धके बाहिर अवस्थित हैं । अर्थात् जो जघन्य द्रव्य कहा है उससे एक कम प्रदेशवाले स्कन्धको जघन्य अवधिज्ञान विषय नहीं करता । >

ʻशंकाॽ< जघन्य अवधिके विषयभूत उत्कृष्ट स्कन्धका प्रमाण क्या है ? >

ʻसमाधानॽ< जघन्य अवधिक्षेत्रके भीतर जो पुद्‌गल स्कन्ध समाता है वह उसका उत्कृष्ट द्रव्य है । उससे एक, दो, तीन आदि अनन्त परमाणु तक अपने उत्कृष्ट द्रव्यसे सम्बध्दवाले होते हुए भी जघन्य अवधिज्ञानके द्वारा जानने योग्य नहीं है, क्योंकि, वे अवधिज्ञानके उद्योतसे बाह्य क्षेत्रमें स्थित हैं । इस प्रकार जघन्य अवधिज्ञानके द्रव्यकी प्ररूपणा की गई है । >

< अब देशावधिज्ञानके जघन्य क्षेत्रकी प्ररूपणा की जाती है - उत्सेध घनाङ्गुलमें पल्योपमके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर एक भाग प्रमाण देशावधिका जघन्य क्षेत्र होता है । >

ʿशंका- < यह कहांसे जाना जाता है ? >

ʿसमाधान- < नियमसे सूक्ष्म निगोद जीवकी जितनी जघन्य अवगाहना होती है उतना क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य अवधि है ।।४ ।। >

कदिअणियोगद्दारे देसोहिणाणपरूवणा

ʿत्ति वग्गणासुत्तादो णव्वदे । सुहुमणिगोदजहण्णोगाहणा उस्सेहघणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो त्ति कधं णव्वदे ? वेयणाए उवरिमभण्णमाणओगाहणप्पाबहुगादो णव्वदे । तं जहा-

ʿसव्वत्थोवा सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा । सुहुमवाउक्काइय-अपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । सुहुमतेउकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । सुहुमआउकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । सुहुमपुढविकाइयअंपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहण असंखेज्जगुणा । बादरवाउकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । बादरतेउकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । बादरआउकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । बादरणिगोद जीवअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा (णिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा) बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा-
< इस वर्गणासूत्रसे जाना जाता है । >

ʿशंका- < सूक्ष्म निगोदजीवकी जघन्य अवगाहना उत्सेध घनांगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है, यह कैसे जाना जाता है ? >

ʿसमाधान- < वेदना अनुयोगद्वारमें आगे कहे जानेवाले अवगाहनाके अल्पबहुत्वसे जाना जाता है । वह इस प्रकार है- >

< सूक्ष्म निगोदजीव अपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना सबसे स्तोक है । सूक्ष्म वाउकायिक अपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । सूक्ष्म तेजकायिक अपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । सूक्ष्म अप्कायिक अपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । सूक्ष्म पृथ्वीकायिक अपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । बादर वायुकायिक

अपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । बादर तेजकायिक अपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । बादर अप्कायिक अपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । बादर निगोदजीव अपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । (निगोदप्रतिष्ठित अपर्या-प्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है) बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तकी जघन्य >

< छ.क. ३ >

छक्खंडागमे वेयणाखंडे

असंखेज्जगुणा । बेइंदियअपज्ज-त्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । चउरिंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । पंचिंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्य उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । सुहुमवाउकाइयपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्सं उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । सुहुमतेउकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । सुहुमआउकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । (सुहुमपुढविकाइयणिव्वत्तियस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । बादरवाउकाइयणिव्वत्तियस्स जहण्णिया)

< अवगाहना असंख्यातगुणी है । द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । पंचेन्द्रिय-अपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । उसके ही अपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । उसके ही पर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है। सूक्ष्म

वायुकायिक पर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । उसके ही अपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । उसके ही पर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । सूक्ष्म तेजकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । उसके ही निर्वृत्यपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । उसके ही पर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । सूक्ष्म अप्कायिक निर्वृत्तिपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । उसके ही निवृत्तिपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । उसके ही निर्वृत्यपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । बादर वायुकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । उसकेही >

*कदिअणियोगद्दारे देसोहिणाणपरूवणा

‘ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया बादरतेउकाइंयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । बादरआउकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा विसेसाहिया । (णिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव णिव्वत्तिप-ज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया) बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीर (णिव्वत्ति-) पज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । बेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा

< निर्वृत्त्यपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । बादर तेजकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तकी उत्कृष्ट विशेष अधिक है । उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । बादर अप्कायिक निर्वृत्तिपर्याप्तकी जघन्य

अवगाहना असंख्यातगुणी है । उसके ही निर्वृत्त्पर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । बादर पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । उसके ही निर्वृत्यपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । बादर निगोद निर्वृतिपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । उसके ही निर्वृत्यपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है। (निगोद-प्रतिष्ठित पर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है ।) बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्तिपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यात-गुणी है । द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । त्रीन्द्रिय निर्वृत्ति- >

छक्खंडागमे वेयणाखंडे

‘संखेज्जगुणा । चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । पंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । पंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । बीइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । पंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ।’

‘सुहुमादो सुहुमस्स ओगाहणगुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सुहुमादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । बादरादो सुहुमस्स ओगाहणगुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो । बादरादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो पलिदोवमस्स

असंखेज्जदिभागो । बादरादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो संखेज्जसमया त्ति (१ वेदना क्षेत्रविधान सूत्र २९-९९ (अ-प्रति पत्र ८९२-८९५) ष. खं. पु. ४ पृ. ९४-९८. ति.प.पृ. ६१८-६४०)।

< पर्याप्तकी जघन्य अवगाहना संख्यातगुणी है । चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना संख्यातगुणी है । पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना संख्यातगुणी है । त्रीन्द्रिय निर्वृत्यपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है । चतुरिन्द्रिय निर्वृत्यपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है । द्वीन्द्रिय निर्वृत्यपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्यपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है । पंचेन्द्रिय निर्वृत्यपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है । त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है । चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है । द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्तिपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है । पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ।>

< सूक्ष्मसे सूक्ष्मकी अवगाहनाका गुणकार आवलीका असंख्यातवा भाग है । सूक्ष्मसे बादरकी अवगाहनाका गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । बादरसे सूक्ष्मकी अवगाहनाका गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है । बादरसे बादरकी अवगाहनाका गुणकार पल्योपमका असंख्यातवा भाग है । (किन्तु द्वीन्द्रिय आदि निर्वृत्त्यपर्याप्ति और उन्हीके पर्याप्तकोंमें) बादरसे बादरकी अवगाहनाका गुणकार संख्यात समय है ।>

कदिअणियोगद्दारे देसोहिणाणपरूवणा

'सुहुमणिगोदलन्धिदअपज्जत्तजहण्णोगाहणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदे संखेज्जघणंगुलमेत्ता महामच्छुक्कस्सोगाहणा होदि, एत्थ पविट्ठसव्वगुणगाररासीणमण्णोण्णब्भासे कदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तरासिसमुप्पत्तीदो । तणे णव्वादि उस्सेहघणंगुले पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे सुहुमणिगोदलध्दिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणा होदि त्ति । एदेसिं सव्वगुणगाराणमण्णोण्णब्भासो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो चेव, सूचिअंगुलमेत्तो सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्तो वा ण होदि त्ति कधं णव्वदे ? सुहुमणिगोदजहण्णोगाहणा पदरंगुलमेत्ता संखेज्जपदरंगुलमेत्ता वा होदि त्ति अभाणिय घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता त्ति सुत्तवयणादो णव्वदे । ण च सुहुमणिगोदजहण्णोगाहणा घणंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ता

आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदघणंगुलमेत्ता वा होदि, महामच्छोगाहणाए असंखेज्जघणंगुल-त्तप्पसंगादो । खेत्ताणिओगद्दारे (१ पुस्तक ४, पृ. ८२-२३.) बादरेइंदियपज्जत्तयस्स वेउव्वियखेत्तं माणुसखेत्तस्स संखेज्ज-दिभागो असंखेज्जदिभागो संखेज्जगुणमसंखेज्जगुणं वा होदि त्ति ण णव्वदे इदि एदम्हादो-

< सूक्ष्म निगोद लब्ध्यपर्याप्तकी जघन्य अवगाहनाको पल्योपमके असंख्यातवें भागसे गुणित करनेपर संख्यात घनांगुलमात्र महामत्स्यकी उत्कृष्ट अवगाहना होती है, क्योंकि, इसमें प्रविष्ट सब गुणकार राशियोंका परस्परमें गुणा करनेपर पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र राशि उत्पन्न होती है । इससे जाना जाता है कि उत्सेध घनांगुलमें पल्योपमके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर सूक्ष्म निगोद लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना होती है । >

ʿशंका-< इन सब गुणकारोंके परस्परका गुणफल पल्योपमका असंख्यातवां भाग ही होता है, सूच्यगुंल प्रमाण अथवा सूच्यंगुलके संख्यातवें भागप्रमाण नहीं होता, यह कैसे जाना जाता है ? >

ʿसमाधान-< सूक्ष्म निगोद जीवकी जघन्य अवगाहना प्रतरांगुलमात्र संख्यात प्रतरांगुलप्रमाण होती है ऐसा न कहकर घनांगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है इस सूत्रवचनसे जाना जाता है । उक्त गुणकारोंका अन्योन्य गुणनफल पल्योपमकेअसंख्यातवें भागप्रमाण ही है । और सूक्ष्म निगोद जीवकी जघन्य अवगाहना घनांगुलके संख्यातवें भागप्रमाण अथवा आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित घनांगुलप्रमाण नहीं हो सकती, क्योंकि, ऐसा होनेसे महामत्स्यकी अवगाहनाके असंख्यात घनांगुलप्रमाण होनेका प्रसंग होगा । अथवा, क्षेत्रानुयोगद्वारमें बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तका वैक्रियिकक्षेत्र मनुष्यलोकके संख्यातवें भाग, अथवा उससे >

ʿवक्खाणादो वा जाणिज्जदि गुणगाराणमण्णोण्णब्भासो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो चेव होदि त्ति । एदेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण घणंगुले भागे हिदे घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तुस्सेहविक्खंभावामो आगच्छदि । एदं जहण्णोहिक्खेत्तं जहण्णोहिणाणेण विसईकदासेसखेत्तमिदि उत्तं होदि । ण च घणपदरागारेणेव सव्वाणि ओहिखेत्ताणि अवट्ठिदाणि त्ति णियमो; किंतु सुहुमणिगोदोगाहणखेत्तं व अणिवदसंठाणाणि ओहिखेत्ताणि संपिंडिव घणपदरागारेण काऊण पमाणपरूवणा कीरदे, अण्णहा तदुवायाभावादो ।

ʿसुहुमणिगोदजहण्णोगाहणमेत्तमेदं सव्वं जहण्णोहिक्खेत्तमोहिणाणिजीवस्स तेण परिच्छिज्जमाणदव्वस्स य अंतरामिदि के वि आइरिया भणंति । णेदं घडदे, सुहुमणिगोदजहण्णोगाहणादो जहण्णोहिक्खेत्तस्स असंखेज्जगुणत्तप्पसंगादो । कधमसंखेज्जगुणत्तं ? जहण्णोहिणाणविसयवित्थारुस्सेहेहि आयामे गुण्जिमाणे तत्तो असंखेज्जगुणत्तसिध्दीदो । ण चासंखेज्जगुणत्तं संभवदि, जद्देही सुहुमणिगोदस्स जहण्णोगाहणा-

< संख्यातगुणा या असंख्यातगुणा है; यह जाना नहीं जाता इस व्याख्यानसे जाना जाता है कि गुणकारोंका अन्योन्य गुणनफल पल्योपमके असंख्यातवें भाग ही है । >

< इस पल्योंपमके असंख्यातवें भागका घनांगुलमें भाग देनेपर घनांगुलके असंख्यातवें भाग सूच्यंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र उत्सेध, विष्कम्भ व आयाम रूप क्षेत्र आता है । यह जघन्य अवधिक्षेत्र अर्थात् जघन्य अवधिज्ञानसे विषय किया गया सम्पूर्ण क्षेत्र है । और घनप्रतराकारसे ही सब अवधिक्षेत्र अवस्थित हैं, ऐसा नियम नहीं है; किन्तु सूक्ष्म निगोद जीवके अवगाहनाक्षेत्रके समान अनियत आकारवाले अवधिक्षेत्रोंका समीकरण कर घनप्रतराकारसे करके प्रमाणप्ररूपणा की जाती है, क्योंकि, ऐसा करनेके विना उसका कोई उपाय नहीं है । >

< सूक्ष्म निगोद जीवकी जघन्य अवगाहना मात्र यह सब ही जघन्य अवधिज्ञानका क्षेत्र अवधिज्ञानी जीव और उसके द्वारा ग्रहण किये जानेवाले द्रव्यका अन्तर है, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । परन्तु यह घटित नहीं होता, क्योंकि, ऐसा स्वीकार करनेसे सूक्ष्म निगोद जीवकी जघन्य अवगाहनासे जघन्य अवधिज्ञानके क्षेत्रके असंख्यातगुणे होनेका प्रसंग आवेगा । >

ʿशंका- < असंख्यातगुणा कैसे होगा ? >

ʿसमाधान- < क्योंकि, जघन्य अवधिज्ञानके विषयभूत क्षेत्रके विस्तार और उत्सेधसे आयामको गुणा करनेपर उससे असंख्यातगुणत्व सिध्द होता है । और असंख्यातगुणत्व सम्भव है नहीं, क्योंकि, जितनी सूक्ष्म निगोद जीवकी जघन्य अवगाहना है उतना ही >